(4) सरकारी योजनाओं की जानकारी

- राष्ट्रीय पशुधन मिशन
- डेयरी उद्यमिता विकास योजना
- पशुधन बीमा योजना
- पशुपालक क्रेडिट कार्ड

(5) संचार माध्यमों का उपयोग

- रेडियो एवं दूरदर्शन कार्यक्रम
- मोबाइल ऐप एवं सोशल मीडिया
- कृषक मेले एवं प्रदर्शनियां
- फील्ड विजिट एवं डेमोन्स्ट्रेशन

4. ग्रामीण विकास में योगदान

प्रसार शिक्षा के माध्यम से ग्रामीण बेरोजगारी में कमी आती है, दुग्ध उत्पादन एवं मांस उत्पादन में वृद्धि होती है, पोषण स्तर में सुधार होता है तथा आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिलता है। यह पशुपालन को पारंपरिक व्यवसाय से आगे बढ़ाकर एक लाभकारी उद्यम में परिवर्तित करने का कार्य करती है।

5. वर्तमान चुनौतियाँ

- अशिक्षा एवं तकनीकी जानकारी का अभाव
- संसाधनों की कमी
- डिजिटल साक्षरता की कमी
- पशुपालकों की नई तकनीक अपनाने में हिचकिचाहट

इन चुनौतियों से निपटने के लिए अधिक प्रभावी प्रशिक्षण, डिजिटल प्लेटफॉर्म का उपयोग तथा स्थानीय भाषा में सामग्री उपलब्ध कराना आवश्यक है।

निष्कर्ष

पशु चिकित्सा विज्ञान में प्रसार शिक्षा की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह अनुसंधान संस्थानों द्वारा विकसित तकनीकों को पशुपालकों तक पहुँचाकर उत्पादन, आय एवं जीवन स्तर में सुधार लाती है। भविष्य में डिजिटल तकनीकों, ई-एक्सटेंशन सेवाओं एवं सहभागी दृष्टिकोण के माध्यम से प्रसार शिक्षा को और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है।

प्रस्तावना

पशु चिकित्सा विज्ञान केवल रोग उपचार तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका उद्देश्य पशुपालकों की आय बढ़ाना, पशुओं के स्वास्थ्य की सुरक्षा तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाना भी है। इन उद्देश्यों की पूर्ति में प्रसार शिक्षा (EXTENSION EDUCATION) एक सेतु का कार्य करती है, जो वैज्ञानिक अनुसंधान एवं पशुपालकों के व्यवहारिक जीवन के बीच संबंध स्थापित करती है।

प्रसार शिक्षा के माध्यम से नवीन तकनीकों, सरकारी योजनाओं, रोग नियंत्रण उपायों तथा आधुनिक पशुपालन पद्धतियों को सीधे पशुपालकों तक पहुँचाया जाता है।

प्रसार शिक्षा का अर्थ एवं महत्व

प्रसार शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से वैज्ञानिक ज्ञान को सरल भाषा में पशुपालकों तक पहुँचाया जाता है ताकि वे अपनी उत्पादन क्षमता और आय में वृद्धि कर सकें।

महत्व:

- पशुपालकों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास
- आधुनिक तकनीकों का अपनाना
- पशुधन उत्पादकता में वृद्धि
- रोग नियंत्रण एवं टीकाकरण के प्रति जागरूकता
- महिला एवं युवा पशुपालकों का सशक्तिकरण

पशु चिकित्सा विज्ञान में प्रसार शिक्षा की प्रमुख भूमिकाएँ

(1) वैज्ञानिक तकनीकों का प्रसार

नई नस्लों का विकास, कृत्रिम गर्भाधान, संतुलित आहार, डेयरी प्रबंधन आदि तकनीकों को गाँव-गाँव तक पहुँचाना।

(2) रोग नियंत्रण एवं स्वास्थ्य संरक्षण

- नियमित टीकाकरण अभियान
- रोगों की पहचान एवं रोकथाम
- स्वच्छता एवं जैव-सुरक्षा (Biosecurity) के उपाय

(3) प्रशिक्षण एवं क्षमता निर्माण

- पशुपालकों के लिए प्रशिक्षण शिविर
- महिला डेयरी समूहों के लिए विशेष कार्यक्रम
- युवा उद्यमियों को स्वरोजगार हेतु मार्गदर्शन

क्रमांक: COOP/2023/KOTA/201080/26/4

एग्रीकल्चर फ़ोरम फॉर टेक्निकल एजुकेशन ऑफ़ फार्मिंग सोसायटी

कोटा, राजस्थान

पशु चिकित्सा विज्ञान में प्रसार शिक्षा (Extension Education) की भूमिका

संकलन

डॉ. विशाल यादव

सहायक प्राध्यापक, पशु चिकित्सा & पशुपालन प्रसार शिक्षा
एम.बी. पशु चिकित्सा महाविद्यालय, डूंगरपुर (राजस्थान)